सन्‌वाणी

प्रगासक :
दिव्या प्रकाशन
सुजानगढ (राजस्थान)

पोथी मिलणं री जग्या
श्री जैप्रकाश सेठिया
३, मंगो लेन
कलकत्ता-७०० ००१

सगला इदकार लिखारं रा है।

मोल : पचास रिपिया

छापणियो :
दि टेक्निकल एण्ड जनरल प्रेस
१७, क्रुकेड लैन,
कलकत्ता-७०० ०६९

दिवलै री लौ

आ 'सतवाणी' कोई सन्तां, अवधूतां री माहधोड़ी कोनी फेर भी मैं म्हारी इण पोथी रो नांव 'सतवाणी' दियो है। मनैं ठा है' क स्याणा मिनखां नैं ओ नांव गमतो कोनी लागै इण उपरात भी वै इण पोथी नैं घणै हेत स्यूं पढसी इण रो मनैं पूरो पतियारो है।

दिवलो सूरज री ठौड कोनी ले सकै पण बो आप री लौ री नोक स्यूं अंधेरै रै दुरभेद परकोटै मे एक नानू सो'क छेकलो जरूर कर सकै है जकै स्यू ही बगत आयां सूरज भगवान बारै पधारसी'र आखी सिस्टी नैं आप रो कंचन वरण उजास बांटसी।

मैं ही म्हारै दीवट पर बैठो म्हारी निमली पडती दीठ स्यू जे बीं आतै उजास री पैली किरण नैं देख सकूं स्यू तो निज नै घणो बडभागी मान स्यू।

बसन्त पंचमी
विक्रम सं० २०४४

कन्हैयालाल सेठिया

मोती		सीपी

	मोती		सीपी

	मोती	सीपी
१८१	कच्चाई कोनी मिटी	इकसठ
१८२	झोटा लेवै नींद रा	,,
१८३	चितण रो गरो कुआ	,,
१८४	निरजण रोहो एकलो	बासठ
१८५	कर विवेक रो छायलो	,,
१८६	नहीं राम र नाव स्यू	,,
१८७	रावण रै दस सीस हा	तेसठ
१८८	पलक फरूकै पलक मे	,,
१८९	बडवानल धधक समद	,,
१९०	उगै न हीरा काकरा	चौसठ
१९१	रतन जडाया मुगट मे	,,
१९२	काम भूख री दोठ स्यू	,,
१९३	मत मोल्योडं ग्यान र	पसठ
१९४	दूज चाद बरतै जिस्यो	,,
१९५	किया त्या'र मूरत घडी	,
१९६	पंली भींचो किडकिडया	छ्यासठ
१९७	आक घटा दै आक नै	,,
१९८	कोनी सत रो सबद स्यू	,
१९९	तू सबदा री भोड कर	सडसठ
२००	गई महक उठ गगन मे	,,
२०१	अगम नहीं भव रो समद	,,
२०२	बगत नहीं थारै बल	अडसठ
२०३	लोक लाज स्यू डर मिनख	,,
२०४	तू अनत रै वासत	,,
२०५	मत परकरमा कर बिरथ	गुणनतर
२०६	आगै सार चालसी	,,

	मोती		सीपो
२०७.	मं'स भूंपड़ी है जिस्या	...	गुणन्तर
२०८.	जता जीव सं रा अलग	...	सत्तर
२०९.	रस नं कर नीरस लगा	...	,,
२१०.	छोडं सोरं सांस कद	...	,,
२११.	मन रं लारं जीव क्यूं	...	इगंतर
२१२.	कठं कठं कोनी गयो	...	,,
२१३.	एक बुझाई सिलगगी	...	,,
२१४.	मूढ़ किस्या दरसण हुवं	...	बहुतर
२१५.	बंधण मोटो राग रो	...	,,
२१६.	जावक सुरड़ी निसरगी	...	,,
२१७.	घाणी रो नारो बण्यो	...	तिहुतर
२१८.	उठा दीठ देखूं जठं	...	,,
२१९.	सहज उगं बणज्या फसल	...	,,
२२०.	सिम्या जका बिछावणां	...	चौहुतर
२२१.	परम पुरुष सवंग्य थो	...	,,
२२२.	डूंगर माथं हिम चढ्यो	...	,,
२२३.	घटं नहीं कोई अघट	...	पिचेतर
२२४.	करड़ावण कोनी सवं	...	,,
२२५.	राम करयो संसे वियो	...	,,
२२६.	हल़ स्यूं फाड़ं काल़जो	...	छिन्तर
२२७.	करं च्यानणो लाय पण	...	,,
२२८.	तू जोड़यो प्रभु स्यूं हियो	...	,,
२२९.	मोड़ो आवं रोज तू	...	संतत्तर
२३०.	कांधं कामल़ जेठ में	...	,,
२३१.	नांव जपण रं वासतं	...	,,
२३२.	फूंक दियां दिवलो बुझ्यो	...	अठंतर

मोती		सीपी

अंतेवासी
गोपालकृष्णजी शास्त्री
रामनिवास ढढारिया
नैं

१

हुवै न सत् री परंपरा
सत असत रो योघ,
पीढी चालै असत री
तत नै समझ अबोध !

२

रयो हुवै निज रो धणी
क्यां नै परण्यो पीव ?
नींद बेच वधू ओझको
लीन्यो मोल़ा जीव ?

३

भेख धरया टोलै रल़्या
नाक धलैली नाथ,
चावै जै साख्यात तो
बण कर रही अनाथ,

४

दीठ हुयां सत माससी
निरयक भेख डफाण,
आंधं नै कोनी दिसै
धरयो हथेली भाण !

५

नहीं भेख मे दीठ मे
संतपणं रो वास,
विन्या हुया समदीठ सो
कात्यो पिन्यो कपास !

६

पित गत रो समतोल है
ओ दिखतो ससार,
हूता पाण अतोल के
खिडता लागं वार ?

७

मोटो समझँ आप नैं
जे तू धन रै पाण !
थारो चेतण बापड़ो
जड़ता लार पिछाण,

८

घड़ी समझ जिण नैं कसी
पूंचैं पर मोटघार,
सजड़ हथकड़ी काल री
फंदो बण्यो लगा' र !

९

कुदरत पाळै बीज नैं
फळ रो चोढं खोळ,
मिनख खोळ नैं मोल लै
फंकै तत अनमोल,

१०

सबद चल कोनी सकै
असबद समद अलूच,
कागद रो घट भर थकी
कलम चिडी री चूच,

११

स्याही, कागद, कलम जड
आखर है निष्प्राण,
सबद जलमसी जद हुसी
सवेदनमय प्राण,

१२

जकी चेतणा जीव मे
बीं रो कोनी आद,
मुगत हू'र परमाद स्यू
कर अणभूत अनाद,

१३

पड़सी पाछो खेत मे
ज्यासो किस्यो पिसीज ?
सकै जाण इण लिखत नै
न फरसो न बीज !

१४

काळै माळां री रयण
दिन रा धवळा केस,
जद घर आवै कामणी
धणी जाय परदेस !

१५

सूरज कद आंथै उगै
न्यारी न्यारी ठौड ?
ओ तो मन रो देत है
किया नैण दै छोड !

१६

बरस्यो धारोधार पण
लियो बेकल् घोस,
ओला भाज्या ठोकरां
जद जल हुयो सदोष,

१७

काल नहीं टूटै जकी
टूटै बा है दोठ,
काला धोला रात दिन
नैण विहग री बींठ,

१८

तिरवालो घी तैल रो
दोन्यू एक समान,
नहीं आख पण नाक स्यूं
बां रो हुवै निदान,

१६

जका सूर रै वंस रा
सकसी झेल उजास,
चमचेड़ां ऊंदी लटक
तम में करसी वास,

२०

जाऊं जाऊं मन करै
जाणो अंजल धीन,
जास्यूं जिण जिण अणखसी
जामण मनै जमीन,

२१

चिणियो आंगल नींव पर
ओ दस खंडो मे'ल,
सूतो तू क्यूं जीवड़ा
मांय हुमोड़ो पैल?

२२

खुली छोड मत आंख नै
रुलती फिरसी दीठ,
जड तू पलक किंवाडिया
सुरत बावड़ी नीठ,

२३

रमै रमतिया साँस री
पण अणदीठी डोर,
रमत खिडै जद ठा पड़ै
रमतो कोई ओर!

२४

सुख दुख करमां लार है
मन निरवाळो राख,
रसना स्यूं गुड़ लूण नै
समभावी बण चाख,

२५

घाट घाट भमतो फिरयो
रीतो घड़लो लेर,
थाक्यो जद निज बावड़ी
घेनै आई फेर,

२६

राखी मन री म्यान मे
तिसणा री तरवार,
जे कर बी नागी वहं
बावणियें नैं मार,

२७

खिरैं जकैं मे ही रवैं
बो है जको असेस,
किरिया हुवै विसेस पण
कारण है अविसेस,

२८

जड चेतण री उमर बण
हूण लागज्या लार,
काल् बापड़ो के करै
बिना उमर गिगनार !

२६

तन नैं मोडो कर ठगो
तू मत निज नैं जीव,
मन मोढो कर खोलसी
ढकियो मोड़ो पीव,

३०

संत सबद सिव नैंण है
छूट दाभ दै काम,
धणख बाय रै रोग री
औखध तातो डाम,

३१

सुवरण सुवरण ही रवै
नहीं कटीजै अंग,
खोट हुवै जिण दरब में
रंग हुसी बदरंग,

३२

अणु रूप करै कुबेरणी
मन में बण करतार,
सागै आयो मायलो
लोप हुसी सभार,

३३

जीव पायणों तू अठै
क्यां री करै धिणाप ?
मारग री खरची हुसी
थारा ही पुन पाप,

३४

कलम तोर मन बावरी
सबद हिरण रै लार,
भाजै बिल स्यूं निकलसी
काल सरप फुंकार,

३५

तू भोला वन मे गयो
घर मे मन नै मे'ल,
वन बणग्यो घर जीवड़ा
जबर करी असकेल !

३६

निरथक पूजा सेवना
काईं फूकं सल ?
खिण खिण मन रै गगन मे
उडै वासना खल,

३७

चावै हूणो भय मुगत
मत फिर दूजां लार,
जा तू थारी सरण में
असरण ओ संसार,

३८

आम नीम नेड़ा उग्या
निज निज रा गुण दोष,
आल़ नहीं देवै इस्यो
मिलै कठै पाड़ोस ?

३९

गगन थाल़ पुरस्यो समद
बादल़ खीच सिझा'र,
भाण घिलोड़ो पून दो
उंधा भरै घी धार,

४०

दिन रो धोलो हासलो
कोयल काली रात
गगन पींजरो फाल ले
फिरै न आवै हाय !

४१

बधग्यो मोलां बगत स्यूं
सयसी किया अकाल ?
चाकर नैं ठाकर करग्यो
इण रा हेला भाल,

४२

गगन पून घर मे बसै
नित उठ आवै भाण,
लूठा लारै क्यू फिरै
फेर हुयोडो ढाण ?

तू जाण्यो पण फद करी
यो थारं स्यूं जाण ?
वोन्या फानी स्यूं हुयं
बीं रो नांव पिछाण,

४४

लियो नहीं जावं मतै
आवं वो सन्यास,
ओ तो मन रो भाय ज्यूं
घडै माय आकास,

४५

फिरं भाखतो परवचन
सुणं न निज रा कान,
माखं जिण नं आचरं
बीं रा वचन प्रमाण,

४६

कर निनाण तिसणा नसँ
हुवँ साव निरबीज,
जणा रूख सतोस रो
फल देसी गदरीज,

४७

नहीं सबद बोलँ भवू
गूगँ भवू न बोल,
नैण नहीं बाँ रँ भवू
के हीरो अनमोल !

४८

कोजो फादो राग रो
पग पग तिसलँ जीव,
छाई नाख अराग री
मिलसी सूख्या सींव,

४६

जद जद में मांदो हुयो
बरप्यो सबद नं चीत,
हणमत बण संजीवणी
ल्यायो पाली प्रीत,

५०

उमर ढली अणचेत मे
बुझी नैण री बीठ,
पण लौ जागी सबद री,
दिखग्यो मनैं अदीठ,

५१

समद मूल सूरज बुझैं
डिगैं हिमालो धूज,
परलं पंखी पून थम
मरसी जीव अमूंझ,

५२

सबद सूर कायर सबद
सबद मूढ, मतिमान,
सबद भेद अभेद है
सबद भगत भगवान,

५३

सबद बांध दै जीव नै
सबद खोल दै फन्द,
विष अमरित साधै जिंयां
सबद इस्यो है छंद,

५४

नित धोचो करतो रवूं
पर है सबद उदार,
निज रै माथै पर धरै
म्हारो भार उतार,

५५

काल कनोई, गगन री
भट्टी, ई घण भाण,
रात कडाही मे तलै
तारा रा पकवान

५६

बूंद समद री मावडी
बाप वडो गिगनार,
सुसरो हिमगिरि घण धरा
नदया दायजो लार,

५७

मन करसो, हल जीभडी
खेत कान उणियार,
खारा मीठा फल हुवै
वचन बीज रै लार,

५८

बोर्णं पंली दीठ वर
बीज फोरड़ू टाल,
पछै रेत री कूख नै
देतो फिरसी आल,

५९

जको निरजण कद करै
सिरजण री बेगार?
सिरजण करसी बो हुवै
जिण नै कीं दरकार?

६०

रच्या न सुख दुख बो जको
प्रभु सत चित आनन्द,
जता डुंद बै जीव रै
निज करमा रा फन्द,

६१

काळा धोळा बादळा
ढकै जियां गिगनार,
बधै इयां पुन पाप स्यूं
आतम तत अविकार.

६२

अकथ साच नै कथ सकै
रळा सबद री झूठ,
बाईजै तरवार कद
बिन्यां लगाया मूठ ?

६३

रतन साथ ले ज्याण नैं
भेल्या युगचो बाध,
ओ ही समज्या तो घणो
कयो वेणिया काध,

६४

नहीं सकै दिवलो भुला
तम थारो उपगार,
थारै कारण नेह दै
मतलबियो ससार,

६५

कद इच्छ्यो तू जलम नै
इच्छै कद तू मौत ?
तू परवस गलवाद कर
मत कर चोडै पोत

६६

फिरै फिरकलो जद हुवै
चिमठी मे कीं साच,
झूठ नहीं गत दे सकै,
त तू परतख जाच,

६७

यास हुयै डीपा घणां
पण मोया के सार?
तुलसी हुयै विलाग री
मांदां रो उपचार,

६८

काम हुयै थारे करघो
ओ है मूढ विचार,
पता अलख सागै जुड़ै
जणां पड़ै भो पार,

६९

आधो धुऊ विकार रो
दीठ ज्यापली चूक,
चेता धुखती चेतणा
दं विवेक री फूक,

७०

देस, काल नैं देस पण
आ लै निसचै जाण,
सत रै मारग जा सकै
नहीं असत रै पाण,

७१

बैठो काल बिसायतो
जीव रमतिया लेर,
पेई मे धरती पड्या
सिङ्या, ढकणो देर,

७२

काल ब्याध तबू गगन
गाड्या धरती खूट,
कुतिया दो दिन रात रा
जीव सकै कद छूट ?

७३

काज बोज खातर घुगै
दै फचरै नै टाल,
हियवं काडण वासतै
मूढ बाल री खाल,

७४

आधी आई जद गया
रावलिया रलफोज,
विपद पड्या रहणो कठण
भेलप, खोज पतोज,

७५

जको रवै निज भाव मे
वो ही सहज सभाव,
थित प्रग नर जाणै नहीं
काई हुवै अभाव ?

७६

कालबेलियं बगत री
पूंगी सो ओ माण,
निकलं अंबर बिवर स्यूं
तम फणधर सुण तान,

७७

गुण गिणती में आ सकै
औगण गिण्या न जाय,
कुण तिराक खारो समद
तिरणै सकै बताय?

७८

फुलड़ा आक गुलाब रा
मोमाखी रस लें'र,
मधु सिरजै तू रच बिंयां
रचना निज पुट दे'र,

७६

पोथ्यां पढ़ पण तू मती
लेई मवल उधार,
पुसट करी थीं लाद स्यू
निज रा मोज-विचार,

८०

रचणा या जिण मे दिसै
सिरजणियं रो दोठ,
नहीं'स बोझो सबद रो
लद मत कागद पीठ,

८१

पगां पड़ै मेला हुवै
जे मंजिल रो ग्यान,
नहीं'स मारग बापड़ा
सूरदास रा बाण,

८२

मजल घता पंखी मनें
जद देख्यूं मैं दीठ,
मजल म्हौं कोई जणां
तू अवधूत वसीठ,

८३

आलै बैठी चिड़कली
दीठ गई गिगनार,
निर्विकार दीख्यो जणां
उड़गी पांख पसार,

८४

नभ माचो दिन सोड़ियो
कामळ काळी रात,
सोर्ण रो मिस कर करै
काळ जीव री घात,

८५

होठ पांगली आ परो
जठै दिसै भल-भोग,
बणसी थिर आ अचपली
जे मन साधै जोग,

८६

ल्यायो साडी मन भरद
नखराली युग नार,
जाया मुख दुख गुत इस्या
नित री गोग्रम ल्यार,

८७

भाण सिलगती येपड़ी
खिडगी बुझती यार,
राख रात ऊपर पड़्या
मखत राजल् अंगार,

८८

भाण मिरकली घीव सो
दिन आटै री खीर,
भरयो गगन रो बाटको
काल निवेड़ै पी'र,

८९

पग धरती, सूडी अनल
नाक पून, चख नीर,
मन अम्बर, तत पाच री
टपरी नाव सरीर,

९०

सत अरजण रो विसरजण
मा रै दूध समान,
दान नही बो विष वमन
अरजित कुकरम पाण,

६१

बैठो भाई साच है
कोड़ो री सी चाल,
झूठ ऊंठ सा डग भरै
पूगण में के ताल ?

६२

ससतर बणग्या सासतर
सबद बुंद रो बीज,
जड़ स्यूं बंधगी चेतणा
मिनख गयो भरमीज,

६३

सूरज चंद आंधै उगै
भरमीज्योड़ा नैण,
इकलंग तापै गगन मे
यों री छाया रैण,

९४

मन राजा इनरघा प्रजा
राखं धणी धिणाप
धणी सताया बापडघा
देसी उत्तर धाप,

९५

लफ भर बोई बीज मत
साग एकण ठौड,
बा भलप के काम री
जुड ज्या जिण स्यू गोड ?

९६

चिणगारी सोनं जिसी
भगन पुरप रो बोज,
परस हुयो बातो गई
मोलं मे गरमोज

६७

सांस जठं पूगं बठं
मतं पुसप री गंध,
के टूंतो टूती इंदां
सूल चुभन निरबन्ध ?

६८

धंधण कवलं पूल री
सयं न थीं री गंध,
इंच्छपा आ हर जीव री
रहूं सदा निरबन्ध,

६९

अणसमतो मत तेवडो
सामीं समतो काम,
दियलो राखो रात नैं
नान्हो लो पर धाम,

१००

अणगिण रै नेडो गयो
मै गिणतो रै पाण,
अत मिलायो अणत स्यू
गिणती रो अैसाण,

१०१

विपद पड्या सागै रवै
इस्या कठै है सैण ?
सिङ्या पडता मोंचसो
पयो मारग नैण,

१०२

आख अधेरै स्यू मिला
मत सूरज नै देख,
नागै सत रै तेज नै
सहणो कठण चनेक,

१०३

हर सिरजण रै मूल मे
बैठी मोटी पोड,
गीत बणै जद काळजै
मोटो उठै हबोड़,

१०४

दीसै देतो हाथ स्यूं
लेतो कोई हाथ,
किण रा देणा पावणा
आ जाणै जगनाथ ?

१०५

जतै मागसी राम री
दीठ कनक म्रग लार,
रावण हरसी जानकी
लांघ लिछमणी कार,

१०६

कोड़ी कण, मण रो करै
हाथों आप जुगाड़,
मगतो बण मोटा मिनख
मतो माजनो पाड,

१०७

इंछै कोनी कीं जको
दान भूलज्या दे'र,
इस्यै मिनख रै सामनै
मंगतो साव कुबेर,

१०८

हीरां रा खाजा करया
गज मोत्यां री खीर,
सूखो टुकड़ो चांवतो
भूखो गयो फकीर,

१०६

फिरै मांगतो भूंगडा
ओढ़यां रेसम शाल,
समझो तू अवधूत यो
बोलो वचन संभाल,

११०

दीयट पर दिवलो चसै
बारै गयो उजास,
इयां सुजस, सोरम, कुजस
घर में करै न वास,

१११

मोसै मिणियों साच रो
पोवै साव अलूण,
कोड़ीनगरै नै जका
पालै लेज्या चून,

११२

माटी मा नारायणी
माटी बिरम महेश,
माटी रिध सिध गोरजा
माटी देव गणेश,

११३

जलमें शतपद कंसलो
हायी रै पग च्यार,
सरप अपग संसार री
लीला रो के पार?

११४

अमी सरीसी मसि सरस
कलम मतो नस नाख,
असबद नेड़ो सबद री
जोत जींवती राख,

११५

गावै जिण रै गीत नै
अणपढ कंठां धार,
कालजयी वो कलम स्यूं
दियो काल नै मार,

११६

हूंता खोड़ा हिरणियां
सुणतां पाण दकाल,
यां रो मिणियों मोसग्यो
दिन बोपारां काल,

११७

नींद मुंदयै नैणां दिखै
ज्यूं मन रा जंजाल,
भासै अंतर दीठ नै
भव रा तीन्यूं काल,

११८

खिण रै लारै खिण गई
खिण आगै खिण फेर,
गई जकी नै भूलज्या
आवै जकी अवेर,

११६

नैण मुंडागै पथ बो
चाल्या लखसी पीठ,
बीठ पीठ दोन्यू दिख्या
मिलसी मन रो ईठ,

१२०

कर लै छोणी नै कलम
उन्डा सबद उकेर,
निमलो लिखत भुजाणसी
काल आगलो फेर,

१२१

एक वेजको जे हुवै
कपडो वाजै पूर,
पण आभै रा देखता
बण्या चनरमा सूर,

१२२

पूग गॉव रै गोरवै
गेलो देई छोड,
बी गेलै अगतो रया
फोनो पूगै ठोड,

१२३

पणिहारी, पाणो, घडो
मिलग्यो सगलो मेल,
फकत इंडुणी रै बिन्या
खिडियो मंडियो खेल,

१२४

मुगता चुगता हंस नै
किण दिन देख्यो दीठ ?
बिरथ तरक, कंवत हुवै
निज मे आप अदीठ,

१२५

पोल ढकीजै बावला
कद ढकिया स्यूं पोल ?
नहीं खोलसी पोल जे
खुलसी थारी पोल,

१२६

कता दरब के गुण धरम
मन री जाण पिछाण,
पुतली रै परदै परा
काटा फूल समान,

१२७

इंनछपा री मछली चपल
गुदलायं मन नीर,
देख दापल्ं दीठ री
बुगलो बंठ्यो तीर,

१२८

तणो मून है रूंख रो
पण पत्ता वाचाल्,
भाज्या पड़ पतझड़ निरख
लागी बतौ'क ताल् ?

१२६

गिण मत उण रा गासिया
जिण नं ल्याघो नूंत,
आडं हाथां पुरस जे
चावं थारी कूंत,

१३०

धोरी थिरती छूटणी
बदल सकं है रूप,
तिरघो कनक रो समद पण
पड्यो समद रं कूप,

१३१

दुरगम मोटं भाखरा
बसं एकलो ना'र,
रवं एक बिल ऊंदरा
डरता टोल् बणा'र,

१३२

भाण कनं कुण जा सकं
धधकं अगन अपार,
लियां हथेली सापड़त
सत रं बल् गिगनार,

१३३

फल् इसड़ा जिण नँ चलै
कदेन वां रा बीज !
अनासगत पण तू इस्यो
परतख देख पतीज,

१३४

दीठ थकी वा समभगी
निरयक जाण पिछाण,
पण तिसणां कद लेण दै
पलकां नैं ओसाण ?

१३५

लिख्या न मं खाता बही
करधा न बाकी जोड़,
घाल्योड़ो गेलो कलम
म्हारो घाली छोड,

१३६

उडघो वापरं साथ तिण
सागो समझ अबूझ,
पडघो अगन मे पून नै
लेतो पैली बूझ,

१३७

गैरो जा चावै हुव
पोंदं स्यू साख्यात,
निज मे देसी जल धुआ
फादं भरिया हाथ,

१३८

फिरा आगली परख तू
किसी क तीखो धार ?
हुव सुहागण रगत रं
छाटा स्यू तरवार,

१३६

देस फाच मे मोलियो
बांध पेच सुवार,
टोकण आई लिण गई
हूतो देस उवार,

१४०

दोठ गई पण नैण रो
खोखो साबत हाल,
उड्यो पखेरू पण रयो
आलो तरवर डाल,

१४१

मोटा घणा मतीरिया
जावक माडो बेल,
चिप जामण स्यू बापडी
सकी कूख नं झेल,

१४२

हर कोई नं पुरस मत
मती करी मनवार,
अपच हुया बणसी गरल
अमरित गरिठ विचार,

१४३

मुजा मती सिर सबद रो
जता अणूतो लाड,
चेतण ओ बणज्या नहीं
चेत गलै रो हाड,

१४४

चढा कसौटी पर मती
ज्यासो सुवरण छीज,
इया अतस्याणो त्रपण
गाहक गयो ठगीज,

१४५

घड़ो, कूंजीयो, माटको
माटी रा आकार,
दोसँ उंडो दोठ नैं
माटी आप कुमार,

१४६

जावक काचा सूत जद
सागँ गया बंटीज,
मारकणो गोधो गयो
बां स्यूं ही नाथीज,

१४७

बादल छंटग्या पण कठै
जावै ओ गिगनार?
कीं कोनी बीं रो सकै
कुण सांवट विसतार?

१४८

छोटी पोटी सबद री
किया समावै साच?
दीसै रूप, अरूप नै
दिखा सकै कद काच?

१४९

अतर तप लाग्या बिन्या
काचो भाडो ग्यान,
चिनीक तिसणा काकरी
देवै खिडा मडाण,

१५०

मालो गोरो चनरमा
सींचो बाडो रात,
नखत पुसब कुचल्या खुरा
बड गोधो परभात,

१५१

खिण खिण मे घट बद हुवै
बदलै भाव विचार,
कोडी सी खिण रयू बण्या
भव गज बती अपार,

१५२

दूहो बड रै बीज ज्यू
राई रै आकार,
वोवै अतर दीठ मे
उग पूगै गिगनार,

१५३

ख्याल सहसफण बापडो
नारायण री सेज,
काल डसै जिण मे हुवै
रस इनरधा रा वेज,

१५४

बीज अदेयल खा सकै
उग्यां जिनावर सार,
मन स्यूं कर सा कलपना
मत पुरषारथ हार,

१५५

मसि गारो माठा सबद
कागद धरती मान,
उठा कलम-करणी चिण्यो
कविता रो अस्थान,

१५६

बीज एक है पण उग्या
ज्यासी पड फटवाड,
आ चिंता कर बीज री
मत तू भविस बिगाड,

१५७

पाव दियो घेरो धरं
पाछो धगन भराय,
क्यं धगत नै निरदई
नुगरो मिनख समाय,

१५८

पढ्या कुभ रै गुण गलै
जणा पतीजी भूण,
ग्यान-नीर स्यां भर सकै
तिरपत जीया-जूण,

१५९

चिन्या बीज निपजै इस्या
कोई हं फल फूल,
गरभ धारा स्यूं टाल दै
वा नै अमरित मूल,

१६०

दिन किण नैं गोरो करै
किण नैं कालो रात?
धोला काला करम है
जका मिनख रै हाथ,

१६१

जका अजोगा मिनख बै
दै हूणी नै आल,
निज रै अकरम वासतै
आ ही लाधै ढाल,

१६२

जियां मिदर्या अणु रै हुवै
बारै घोर निनाद,
वियां चेतणा मिद जगै
अंतर अनहद नाद,

१६३

सोधं सिस्टी मूल् नं
जको साव निरमूल्,
कोनी लाधं बीज तू
कांदो छोल समूत्!

१६४

करम बंध्या कद जीव रं
तरक उठावं बात,
सहज पड़ूतर कनक रं
जद रयूं माटी साथ,

१६५

सिस्टी नं विंबित करं
मन रो काच विचार,
निरविचार, जे मन हुवं
भासं कद संसार?

१६६

आडो रसना रै करी
दांत होठ री पाल,
जे उलांघ बारै हुवै
बोलो वचन संभाल,

१६७

काढ फूल रै जीव नै
अंतर दीन्यो नाम,
अतरजामी कद लखै
देखै आठों याम?

१६८

बड़ काजल री कोटड़ी
रयो जको अणदाग,
नर देही में सापड़त
जलम्यो आप विराग,

१६९

सबद अर्थ कर दं सिमा
जा तू थारी ठौर,
थारं अणहद हेत स्यू
मैं पीडीजू ओर,

१७०

उच्छब रं रमझोल मे
टूट्यो मुगता हार,
मुगत हू'र नाची मिण्या
सुवं राजदरबार,

१७१

छ्यां न इन्छै रूख पण
सूरज रो सजोग,
इया बध्यो सुभ करम रं
लारं पुन रो जोग,

१७२

मिलसी जड नैं अरथ जद
जुडसी चेतण सास,
बण्यो किसन री बसरी
निरथक थोथो बास,

१७३

जीव नाव ठाकर बडो
देह दुरग मे वास,
चाकर पाच रुलेडमन
मरजीदान खवास,

१७४

सबद तूतडा बो'र क्यू
रूधं कागद खेत?
अं जाबक निरजीव है
आ नैं गिटसी रेत,

१७५

रीतो दिवलो सबद रो
नहीं भाव रो नेह,
बिन्यां दीठ-सूळी कियां
जगमग करसी गेह ?

१७६

झूठो साचो के हुवै
धरम धरम है मूढ,
नहीं विसेसण सुणन मे
आयो साची झूठ,

१७७

जळ स्यूं धरती नीसरी
अनळ परगट्यो नीर,
नारायण रो सासरो
जळ लिछमी रो पी'र,

१७८

संसारी समबन्ध है
भीणा पूत समान,
बणं किराणो केवट्या
नहीं'स कचरं मान,

१७६

बाजो सावण डोकरी
किया जलमता पाण?
खिण मे बचपन जोबनो
जरा भोग ली लाण,

१८०

एक एक तिण चुग चिडी
लीन्यो आलो घाल,
बा छोटी पण नित बडी
लागी कतो'क ताल?

१८१

कच्चाई कोनी मिटी
मत कर घडा गुमान,
किसी ठेस के ठा करै
तनै ठीकरै मान ?

१८२

झोटा लेवै नींद रा
थोडी ताल बिलो'र,
काढयो चावै चूंटियो
दै झोटा संजोर !

१८३

चिंतण रो गैरो कुओ
लियो अलूच कबीर,
'सतवाणी' स्यूं खोल दी
फेर रुन्धोडी सीर,

१८४

निरजण रोही एकली
बैठो गई अमूझ,
करी कमेडी गटर गू
आभे पूगी गूंज,

१८५

कर विवेक रो छायलो
मन रा फटक विचार,
उडसी निरथक तूंतडा
रहसी दाणा लार,

१८६

नहीं राम रैं नाव स्यूं
कम रावण रो नाव,
रामपुरा केई नहीं
पण रावणपुर गाव,

१८७

रावण रै दस सीस हा
आ कोरी गलवाद,
कुबधी रो परयाय बण
गयो लोक परवाद,

१८८

पलक फरूकै पलक मे
के ठा कतो'क वार?
मूगी सासा कुण गिणै
गिणै टका ससार,

१८६

बडवानल् धधकै समद
दावानल् कातार,
रागानल् सिलगै बलै
ओ आखो ससार,

१६०

उगं न हीरा कांकरा
उगसी यो ही बीज,
लख माटी री पीड़ नं
ज्यासी जको पसीज,

१६१

रतन जड़ाया मुगट मे
चुग चुग घणां अमोल,
जड़ियो लो बुध-मिण चुरा
चूकी दीठ डफोल,

१६२

काम भूख री दीठ स्यूं
मिनख डांगरो एक,
पण पिसतावं मिनख जद
जागं हियं विवेक,

१६३

मत मोलपोडं ग्यान रं
हियो अडाणं राख,
यारी बुध री मिण ढकै
क्यू तू गोबर नाख,

१६४

दूज चाद वरतं जिस्यो
पाटी काली रात,
बारखडी तारा वगत
लिखं भुजाणं प्रात,

१६५

किया त्या'र मूरत घडी
इस्यो बजर पाषाण ?
इण रो हियो पसीजसी
कद दुख जग रो जाण ?

१९६

पंली मींचो किडकिडया
पछै मींचली जाड,
मैं समझ्यो ओ काकरो
लाग्यो पर्छ पहाड,

१९७

आक घटा दै आक नै
आंक आक नै जोड,
कोनी कीं घट बद हुवै
रैसी आखर ठौड,

१९८

कोनी सत रो सबद स्यूं
समधरमो समबन्ध,
सत री भासा मून है
जियां फूल री गंध,

१९९

तू सवदा रो भीड़ कर
जग्या न राखी सेस,
कोरो कागद भाखतो
थारो गूढ़ सनेस,

२००

गई महक उठ गगन मे
छमक्यो जणा बघार,
करम चीकणा खय हुयां
खुल्यो मुगत रो द्वार,

२०१

अगम नहीं भव रो समद
पण लै पंली जाण,
नाख पोटली दरब री
तिरसी तूबां पाण,

२०२

बगत नहीं धारै धल्
कर लै नीची नाड़,
बगत फिरयां बण कांकरो
पगां पड़ैतो पा'ड़,

२०३

लोक लाज स्यूं डर मिनख
करै नहीं जे पाप,
पराधीन अै बापडा
ज्यूं कील्योड़ा स्याप,

२०४

तू अनन्त रै वासतै
मोल्या जाप करोड़,
अणगिण स्यूं मिलणो हुवै
मिणियां गिणना छोड,

२०५

मत परकरमा पर बिरथ
बैठो रह इण ठौड,
दीठ राख मिलसी तनै
यो कोनी रू तोड़ !

२०६

आगै लारै चालसी
पग दोन्यू ओ नेम,
करघा ईसको गत कठै
फेर कुसल के खेम ?

२०७

मं'ल झूपड़ो है जिस्या
बिरथो सहज बनवास,
देह नहीं पर दीठ में
थित प्रग करै निवास,

२०८

जता जीव सं रा अलग
करमा सारू दुंद,
निज री कूंची स्यूं खुलै
अंतर तालो बन्द,

२०९

रस नै कर नीरस सगा
आतम तप री आंच,
इयां ग्यान गाढो हुयां
बरत पलैला पांच,

२१०

छोडं सोरं सांस कद
लाग्यो तिसणा भूत ?
कर ठुकतरी सातरी
काढ ग्यान री जूत,

२११

मन रै लारै जीव क्यूं
खांतो फिरै भचीड़?
चायै मिलणो साच स्यूं
काढ आंख स्यूं भीड़,

२१२

कठै कठै कोनी गयो
ओ सरभंगो जीव?
नरग सरग भमतो फिरै
करमां बंध्यो कुजीव,

२१३

एक बुझाई सिलगगी
दूजी तिसणां ओर,
राख हुसी जद बरससी
अनुकंपा रा लोर,

२१४

मूढ़ किस्या दरसण हुवै
फिरयां देवरा धाम ?
दरसण कर निज रा हुवै
ओ मनड़ो निष्काम,

२१५

बंधण मोटो राग रो
ज्यावँ गज बल् थाक,
तिसणां त्याग्यां ओ झरै
जियां खिरै फल् पाक,

२१६

जावक गुरड़ो निसरगी
दी क्यूं सिरया नाख,
चुरा कांकरो दी गमा
हीरां वरगी साख,

२१७

घाणी रो नारो बण्यो
सबद घाल ली नाथ,
मुगत हुसी जद चेतणा
असवद आसो हाथ,

२१८

उठा दीठ देखू जठै
बठै रतन भडार,
के छोड़ू लेऊँ हुई
दोगा चिंती लार ?

२१९

सहज उगै बणज्या फसल
तुरत झूठ रा बीज,
उगै न हीरो साच रो
चावै अमरित सींच,

२२०

सिम्या जका बिछायणा
दिन उगियां यं पूर,
सरब जिकारा गरज रा
गोगो मार्जे धूल,

२२१

परम पुरुष सर्वग्य थो
रामचन्द्र भगवत,
सोधण सीता नैं गयो
पण वानर हणवत,

२२२

डूंगर माथै हिम चढ्यो
निज नैं मान विसेख,
तालामेली लागगी
सूरज सामो देख,

२२३

घटै नहीं कोई अघट
भिड़्यां ठोठ स्यूं ठोठ,
कद लागी एरण हुवै
सायां घण री चोट ?

२२४

करड़ावण कोनी सवं
कनक जको सो टंच,
जे चाहीजै हार तो
रला मांय परपंच,

२२५

राम करयो संसै दियो
घण नै झूठो आल,
हुई भसम निज में अगन
सत नै दियो उजाल,

२२६

हल़ स्यूं फाड़ं फाल़ओ
घालं ऊंडा घाव,
खिमावान धरती मिनख
पण तू नुगरो साव,

२२७

करं च्यानणो लाय पण
डरपं बों स्यूं जीव,
लागं गमतो रीत रो
चावं अमरित घीव,

२२८

तू जोड़यो प्रभु स्यूं हियो
चिनीक रंगी फाक,
पूरो बंठा जोड़ नं
पाछो सावल़ चांक,

२२६

मोडो आवै रोज तू
कंवै मोड़ो खोल,
जाण बूझ मे फेंक दी
घायी बंठ टंटोल़,

२३०

काधै कामल़ जेठ में
तनै सियाल़ो चोत,
कियां भूलग्यो मरण नै
मनड़ा म्हारा मीत ?

२३१

नांय जपण रै वासतै
क्यूं छोडयो तू काम ?
जदै जकै श्री राम नैं
बो रोप्यो संगराम,

२३२

फूंक दियां दियलो बुझ्यो
बो थारै प्राधीन,
सूरज कोनी बुझ सकै
जको आप स्वाधीन,

२३३

उडै पंखेरू मोकळा
आवै पाछा चाल,
आभै मे कोनी सकै
कोई आळा घाल,

२३४

मोती मिणसी बो हुवै
जिण री निरमल दीठ,
सुच्छम दीसै कद तनै
डूगर दीखै नीठ,

२३५

देतो मत फिर ओळमो
मत दे झूठी आळ,
कांई नांय के जमा
निज री बही संभाळ,

२३६

सेल मती सुक्मींचणो
निज स्यूं भोळा जीव,
रयो रमत में जीव तो
जासी आयो पीव,

२३७

बोध्यो जका न ग्यान नै
आ ही देसी सीख,
कांई करसो दीठ रो
पकड़ घां बग तू लीक,

२३८

रवै फूल में पांखड़्या
पण फल् एकमएक,
ज्यूं मंजल रै पंथ मे
डगरयां मिलै अनेक,

२३९

माया मिनखा स्यूं बडी
माया मायड तात,
परम पुरष री बीनणी
माया री के बात ?

२४०

गाव भलो समझै तनै
बात नहीं कीं खास,
पाड़ोसी चोखो कवै
जणा करी विसवास,

२४१

घाव एक सा पण फरक
कर दं छाती पीठ,
कुण कायर कुण सूरमा
पणं कचेड़ी दीठ ?

२४२

मती कल्पना कर करी
तू निरणं मागूंछ,
छूटली कोनी पछं
जिद नाहर री पूंछ,

२४३

म्हे ढोवां पग कद कवं
माथं पर लो भार ?
निज रं करतब नं कणां
मानं पर-उपगार ?

२४४

सत, सीपट्यां दं बगा
समद न रालं पाल,
मोती कोनी काढ दं
पर यो सोरं सास,

२४५

के लेणो के बेचणो
कर लं फड्दी त्यार,
रयो गतागम मे पज्यो
ज्यासी उठ बाजार,

२४६

लेता सौदो हर जठै
मेल मूछ रो माल,
मिलं न कोडी सिर सटं
मिनखां सारू काल

२४७

आ'र पड़्यो माथै बजर
तनै समझ इण जोग,
खरो उतर तू परख में
सम दिस्टी स्यूं भोग,

२४८

तुलता मोती ताकड़्यां
बोरा हीरा लाल,
बा रै फोड़ा चून रा
मन रो मौजी काल,

२४६

सिस्टी स्यूं दिस्टी बड़ी
धरती स्यूं गिगनार,
हुवै मिनख रो के बडो
बीं रो बडो विचार

२५०

फिरै पीवणां स्यापड़ा
भेख मिनख रो धार,
सूतोड़ां रा सांस पी
भाजै फण फटकार,

२५१

धरम आचरण स्यूं सधै
ओ कोनी परचार,
जड़ां अदीठी रूंख री
करै मांय परसार,

२५२

समधरमी है हिम-अगन
सागी मूल् सभाव,
दाझै तरवर आकरो
दोन्यां रो ही ताव,

२५३

गगन एक कोनी अलग
हर अणु रो आकास,
दीठं समद अदंत बो
बूदां रो सहवास,

२५४

चांदी स्यूं चन्दो घड़चो
सोनं घड़ियो भाण,
हीरा जड़िया नखत ओ
कुण मोटो धनवान ?

२५५

सुई नहीं कीं काम री
हुवं नहीं जे बेझ,
बड़ बेझ में गुण करं
बेझा नं अनबेझ,

२५६

बधसी यो ही आंक मे
ज्यावँ जको गिणीज,
आमा के अकं गया
आंपडिया अकीज ?

२५७

माटी छांटां ओसरघा
कालो बादल गाज,
पिवजी आया पाणचक
हुई हरी भर लाज,

२५८

खोटी मत चिन्ती हुव
चितणिय री हाण,
मन रैं निरमल तिरय नैं
क्या न करैं मुसाण ?

२५९

सींचो नीर सनेव रो
मती करीजे चूक,
इया वैर रो आकडो
सहजा ज्यासी सूल,

२६०

तू मगतो दरपण अपण
कोनी दै क्यौं काढ,
रीझ खीज चावँ हुयो
थारा नंण अपाढ,

२६१

दरपण नै अरपण हुवँ
सज गोरी सिणगार,
पण दरपण री दीठ मे
जागं नहीं विकार,

२६२

रत जातां भेला करया
करसो कामल बीज,
कातो मे सामो दिखं
थीं नं भ्रालातीज,

२६३

कलम हुई आगं पछं
लारं हुया विचार,
कलम ठमी आखर गया
आतम रं दरबार,

२६४

अणभव बो आवं जको
बगत पडचा पर काम,
कूंची के कोनी मिलं
जद चाहीजं दाम ?

२६५

लोक धरम आतम धरम
अं दोन्यूं छत्तीस,
सावल मारग समझलं
किस्यो बीस उगणीस ?

२६६

जलम मरण रं जाल स्यूं
छूट्यो चावं जोव,
मत तू करी बधोतरी
राखी संजम सींव,

२६७

फिरं मोड़ मे सोधतो
तू किण नं मोटयार ?
'मं' गमग्यो सहजा हुयो
थारो बेड़ो पार,

२६८

तू चाल्यो पग मांड कर
धरती मरसी लाख,
इया नहीं हामल मरै
तै उपाव कर लाख,

२६९

छोलै डील खराद पर
ठोकै कील लुहार,
दुरगत ज्यूं ही गत मिलै
लट्टू सो संसार,

२७०

मकड़ी ज्यूं जाळो गुंथै
काढ देह स्यूं तार,
माया ठगणी ज्यूं रचै
ओ दिखतो संसार,

२७१

रामधणख रो सतलड़ो
बांध बीज री पाग,
बादल़ आयो बीन बण
बड़ा रेत रा माग,

२७२

अंध वासना उरवशी
चाह मेनका आप,
ओल़ख विसवामित्र है
थारै मन रो पाप,

२७३

सूरज रै तप बल़ चढ्यो
गगन पांगल़ो नीर,
तिलक करयो बिजल़ी समझ
सूंठा इण रै सीर,

२७४

नैंण कोटड़ी में बसैं
सपनैं भेली साच,
अकन कुंआंरी आण दै
कद निज सत नैं आंच ?

२७५

सहस धार अमरित झरैं
कै आणद रो पार ?
पण विसन्या नैं लत पड़ी
फिरै जं र रं लार,

२७६

घुमा चकरियो वेग स्यूं
थिर ज्यूं दिखसी चाल,
करैं अयग थितप्रग करम
दीसैं पड़्या निढाल,

२७७

वगत वगत री बात है
कुण राजा कुण रंक ?
पड़ी ठोकरां धूल् री–
आभै चढ़गी खंख,

२७८

सावल् सवड़ी रावड़ी
पाड़ी मती सपीड़,
मत कर घणो सुवादिया
देसी काल् गदीड़,

२७९

थारै घर रै आंगणै
जड़िया रतन हजार,
तनै दोखसी मोलिया
कचरो नाख बुहार,

२८०

दीठ नहीं तो सबद है
कलम चिड़ी री बींठ,
मत कर कालो़ वापरघो
धोलो़ कागद नीठ,

२८१

ऊबो जठै अगूण है
सिरख्यां बो आयूंण,
आगै पाछै पग दियां
भुंवै गगन री भूण,

२८२

गाठ खुल्या लांबी हुवै
ज्यूं उलझ्योड़ी डोर,
मन री गांठां खोल तू
डीघो बणसी ओर,

२८३

गांव जठै गेला यठै
ढुकसी छेकड़ धाप,
समद नहीं नूंतै नदयां
भाजी आवै आप,

२८४

अगन धधकतो न्यावड़ो
घट री काची देह,
धिन कुमार रो कालजो
करै न आपो नेह,

२८५

जीवण कद निज में मजल
ओ तो मारग जीव,
आसंगा बैठो तकै
इया न आवै सींव,

२८६

छात गगन भू आगणो
सजम री सुख सेज
पोढं वो ही रालसी
आतम मणी सहेज ?

२८७

धुकसी लकडी एकली
कोनी पकडं आग,
समधरमी सागं हुया
जागं राग विराग,

२८८

तपै अधेरं मे दियो
निरमं मन नं साध,
असुर होलका गोद मे
बैठो ज्यू परलाद,

२८९

बिना पात्र जोगो हुयां
निरथक देणो बोध,
सिघण रै पथ वासतै
ठाव कनक रो सोध,

२९०

चावै करणी साधना
मत धारीजे भेख,
रह तू सहज अभेद बण
भेद बढावै धेख,

२९१

चिणगारी कोनी सकै
लगा लोह मे आग,
काठ हियै सूती अलख
परस्यां ज्यासी जाग,

२६२

कोनी कीं पल्लै पडै
कोई नै आराध,
अक्ल सरीरा ऊपजै
निज आतम नै साध,

२६३

ध्यान ध्याण रो मत्र है
घूटी कोनी ध्यान,
ध्यासी बो ही त्यागसी
परिगह नै विष मान,

२६४

पुरषारथ बो ही करम
जीतै जको विकार,
निरवरती आतम धरम
परवरती ससार,

२६५

गोरख धंधो समझ जे
तू छोड्यो संसार ?
फेर लगायो पंथ रो
क्यां न टंटो लार ?

२६६

मोह मुगत मनड़ो हुवै
खिण खिण राखता जाग,
थित प्रग बण अभ्यास स्यूं
मतं विणससी राग,

२६७

वजर मान नारेल रै
हिय मे करुणा नीर,
पोखं आखी जूण नैं
संवेदण री सीर,

२९८

निन्दा सुण ज्यावँ चिगर
जस गाया पोगीज,
कठपुतलो बो बापडो
निज पर नहीं पतीज,

२९९

पोथा ढोया ग्यान रा
कोनी हुवँ उजास,
जे तू चावँ च्यानणो
निज रो दिवलो चास,

३००

मत इनरघा नँ रोस तू
अँ जाबक निरदोप,
यारो बँरी अलख मन
बीं रा भींटा कोस,

३०१

भाव भूप री पालकी
ढोवै सबद कहार,
मिल राजा स्यूं मूढ क्यूं
फिरै कहारां लार ?

३०२

डाळ पान में उलझ मत
जाण्यो चावै भेद,
मूळ पकड़ ज्यासी समझ
सत है एक अभेद,

३०३

मन री बांबी में पड़्या
मिणधर सरप अनेक,
अटकळ स्यूं मिण ले सकै
जिण में सहज विवेक,

३०४

तप करसी मेली हुसी
उरजा आपो आप,
बणं बिन्या उपजोग बा
दुरवासा रो शाप,

३०५

समद मथ्यो जद नीसरयो
अमरित सागै जैर,
जद का जूझै सुर असुर
कोनी निवड़यो बैर,

३०६

जावक काला कोयला
करसी सिलग उजास,
उरजा बणसी वासना
तप री तूली चास,

३०७

नान्हो सी कीड़ी मरै
जद बटको चोंथीज,
दाबो मती विचार नैं
डस लै लो पीड़ीज,

३०८

छोडै कोनी ठौड पण
कियां उडै आ आंख?
घणी अचपली दीठ री
कोनी दीसै पाख,

३०९

आसो परणन नै तनै
मरण फूठरो पीव,
हथलेवै री बगत पण
मती लकोई जीव,

३१०

राम नहीं रावण नहीं
अं विचार रा नाव,
एक सुबुध दूजो कुबुध
बाल्यो निज रो गाव,

३११

जावक नान्ही काकरी
नीर गहन गभीर,
पण मत फेंको पीड स्यू
सगला हुवै अधीर,

३१२

बडा हुवै बा नं नहीं
निज बडपण रो मोद।
मोती री मं मावडी
नहीं सीप नं बोध,

३१३

अपग हुवै सत कद मडै
भोला उण रा खोज?
क्यूं निरथक ममतो फिरै
सत अंतस मे सोझ,

३१४

करै नहीं ज्यूं रूप नै
बिम्बित आंधो काच,
बिनां हुयां निरमल हियो
कद अणभूतै साच?

३१५

मुगती रो गेलो नहीं
बंधो बंधाई लीक,
बठै पूगसी संत बै
चालै जका अलीक,

३१६

बाय घाल ली सबद रै
बणग्यो सबद बलाय,
सिंघ अपड़ियो स्यालियो
जे छोडै तो खाय,

३१७

चावै देणी साच पर
जे तू थारी छाप?
साच सिरक ज्यासी परै
बा कद सवै धिणाप?

३१८

ममता नै समता बणा
अनुकंपा मे जाग,
जणा समझसी जीव तू
कांई राग अराग?

३१९

घणो गहन आतम धरम
पूगै बठै अभेद,
दीठ साध सैं सोपसी
बीं छिण सगला भेद,

३२०

हेला मारै भजल नै
घरै न आघो पेंड,
सबटीजै गेलो नहीं
इंया हुयां रपू एंड,

३२१

मुगती इंछै जीव जे
कोनी छूटघो राग,
विणसै इच्छया बीज जद
उगसी हियै अराग,

३२२

ममता त्यागै पण हुवै
निरमम कोनी संत,
वीतराग रो अरथ है
करणा सिन्धु अनन्त,

३२३

हुवै न जिण रै हेत में
रंच सुवारथ गंध,
मिनखपणं रा पुसब बै
सांसा बसै सुगंध,

३२४

नहीं तूंतड़ं मे घलै
ज्यूं काढचोड़ो धान,
बिया न पाछो बावड़ै
वचन कप्योड़ो जाण,

३२५

जुड़ै नहीं ज्यूं रूंख स्यूं
एकर भड़ियो पान,
बिथा न फाट्यो मन मिलै
निरथक खैंचाताण,

३२६

हेम कांचली तावड़ी
धानी साड़ो खेत,
बण ठण बैठी गोरड़ी
मारवाड री रेत,

३२७

आड़ावल् माथै मुगट
चामल् गल् रो हार,
जैसाणैं पग रोपिया
मारवाड मोटचार,

३२८

माथै अंबर मोळियो
कांधै सूरज ढाल,
लू रो लपको टोरड़ो
मरुधर मरद मुंछाळ,

३२९

रवै कुअं रै मांय नैं
जियां कुअं री छांव,
वियां मतळबी मिनख रै
मवूं न बीं रो गांव,

३३०

रात डावड़ी बगत री
आंचळ ओळं लें'र,
सूरज रो दिवलो चढी
फेरूं गगन मुंडेर,

३३१

देस नहीं मरुदेस सो
मृगमद जिसी न गन्ध,
सुरसत रै भंडार में
दूहै जिस्यो न छन्द,

पांच महाव्रत

अहिंसा

जे मैं मारूं, सामलो
हणसी म्हारा प्राण,
नहीं अहिंसा आ जको
उपजै डर रै पाण !

ओ सरीर रो धरम है
कोनी तत रो ग्यान,
जको जीण री वासणा
परतख हिंसा जाण !

थकां सामरथ छोड दै
जद विवेक स्यूं राग,
जुड़ै अहिंसा अभय स्यूं
बो है सहज विराग।

खमा भाव आतम धरम
अनुकंपा में मूल,
दीठ हुयां अंतरमुखी
कुण कांटा, कुण फूल !

सत्य

मुगत दीठ राखयां बिन्यां
कद अणमूतै साच ?
परतख करसी साच नैं
अनेकांत रो काच,

कियां अकथ नैं कथ सकै
सबद बापड़ो मूल ?
सबद मोह में मत पड़ो
मारग ज्यासी भूल।

साच दूध पण काचरी
मन रा मिनख विकार,
दही जमै बुध रो हुयां
अंतरमन अविकार।

अपरिग्रह

परिगह मूल विकार रो
संचै मोटो पाप,
तिसणा स्यूं तिसणा बधै
' कोनी आवै धाप,

करै काल री चिंतणा
मती काल नै भूल,
खिण स्यूं आगै सोच मत
खिण है साच समूल,

चावै मुगती जींवतो
कर निज नै निरलेप,
लोभ कतरणी मत चला
सिवै जतो ही नेप !

अस्तेय

तिसणावश जे मिनख लै
वनफल नै ही तोड़,
या चोरी खिण में बंधै
करम चीकणां कोड़,

नहीं दरब स्यूं भाव स्यूं
लागै चेतण आल
तत पाचां नै सेव कर
आडी संजम पाल,

मन स्यूं ओलै रह सकै
चोरी कोनी जीव,
पड़यो अंधेरै मे रवै
छानो कदै न घीव ?

ब्रह्मचर्य्य

सुख ही दुख रो बीज है
मन आसूदो खेत,
मत बो पडसी लाटणो
मिनख वगत सर चेत,

जे चावै इण खेत मे
निपजै परमानन्द,
बिरमचरज स्यू बाध दै
उरजा आडो बध,

घास फूस कोनी बधै
कोनी चढै निनाण,
रम आतम मे जीवडो
ज्यासी बण भगवान!